प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 18 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

परिंदों ने आपकी जिंदगी को सुर दिए और आपने? पक्षियों का चहचहाना किसे अच्छा नहीं लगता होगा। पर ये पंछी खुद शहर के बढ़ते शोर से इस कदर परेशान हैं कि उन्हें अपने लिए एक अदद आशियाना नहीं मिल पा रहा है। कनाडा के शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन में यह पाया कि शोर शराबे के माहौल में पक्षियों के संगीत की सदा गुम होती जा रही है इतना ही नहीं बढ़ते ध्वनि प्रदूषण की वजह से पंछियों के संवाद करने की क्षमता पर भी असर पड़ा है। पक्षियों की गतिविधियों पर नजर रखने वाले शोधकर्ताओं का कहना है कि नर पक्षी की आवाज को पूरी तरह से सुन पाने में नाकाम होने वाली मादाएँ अपने नर साथियों को बीमार समझकर खारिज कर सकती हैं। शोध से जुड़े डैरेन प्रॉपे कहते हैं, शहरी इलाकों में मधुर आवाज वाले पक्षियों को बचाने को लेकर लोगों की दिलचस्पी बढ़ी है यह जैव विविधता से भी जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा, हम यह भी जानते हैं कि इन इलाकों में शोर का स्तर अधिक होता है। शोध के दौरान युनिवर्सिटी ऑफ अलबर्टा से जुड़े डॉक्टर प्रॉपे फिलहाल अमरीका के कैल्विन कॉलेज के लिए काम कर रहे हैं वह कहते हैं शहर के कुछ इलाकों को देखकर ऐसा लगता है कि यहाँ गाने वाले पक्षियों के लिए माकूल माहौल होगा लेकिन वहाँ इनकी तादाद बहुत कम होती है। शोध करते वक्त इसी मुद्दे को केंद्र में रखा गया था कि क्या किसी शहर में रहने वाले पक्षियों और वहाँ के शोर के स्तर के बीच कोई संबंध भी है। एडमंटन में इस अध्ययन के लिए एक टीम शहर की 113 प्राकृतिक जगहों पर गई। डॉक्टर प्रॉपे ने इस बारे में कहा, शोध में हमने पाया कि शहर के जिन इलाकों में शोर ज्यादा था वहाँ गाने वाले पक्षियों की तादाद कम थी। अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि मादा पक्षी निम्न आवृत्ति वाले किसी गीत को सुन पाने में खुद को जब असमर्थ पाती हैं तो वे नर पक्षी की आवाज को असामान्य महसूस करने लगती हैं तो धीरे–धीरे इसका नतीजा सामने आने लगता है। अगर नर पक्षियों को मादा जोड़े ना मिले तो उनकी नस्लें कम होने लगेंगी और इसका असर उनकी आबादी पर दिखेगा।

1. ध्वनि प्रदूषण के कारण क्या होता है? 2

उत्तर : ध्वनि प्रदूषण के कारण पक्षियों के संवाद करने की क्षमता पर असर पड़ा है। शोधकर्ताओं का कहना है कि नर पक्षी की आवाज को पूरी तरह से सुन पाने में नाकाम होने वाली मादाएँ अपने नर साथियों को बीमार समझकर खारिज कर सकती हैं।

2. डैरेन प्रॉपे का क्या कहना है? 2

उत्तर : डैरेन प्रॉपे जो शोध से जुड़े हैं का कहना है कि शहरी इलाकों में मधुर आवाज वाले पक्षियों को बचाने को लेकर लोगों की रुचि बढ़ी है। यह जैव विविधता से भी जुड़ा हुआ है।

3. मादा पक्षी नर पक्षी की आवाज को कब असामान्य महसूस करने लगती हैं? 2

उत्तर : जब मादा पक्षी निम्न आवृत्ति वाले किसी गीत को सुन पाने में खुद को असमर्थ पाती है तो वे नर पक्षी की आवाज को असामान्य महसूस करने लगती है।

4. इस गद्यांश में क्या संदेश है? 2

उत्तर : इस गद्यांश में यह संदेश दिया गया है कि हमें ध्वनि प्रदूषण को कम करके प्रकृति के अन्य जीवों को भी जीवित रहने का अवसर देना चाहिए।

5. शहर में रहने वाले पक्षियों और शोर के बीच क्या संबंध है? 1

उत्तर : एक शोध में पाया गया कि शहर के जिन इलाकों में शोर ज्यादा था वहाँ गाने वाले पक्षियों की तादाद कम थी।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : पक्षियों के जीवन का महत्त्व।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. जब मजदूरों ने गड्ढा खोद लिया तब वे चले गए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : मजदूरों ने गड्ढा खोदा और वे चले गए।

2. एक चिड़िया हमारी खिड़की पर डरी–डरी बैठी थी। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जो चिड़िया हमारी खिड़की पर बैठी थी वह डरी–डरी थी।

3. झूरी के दोनों बैलों को गया के घर मजबूरन जाना पड़ा। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : झूरी के दोनों बैल मजबूर थे इसलिए उन्हें गया के घर जाना पड़ा।

4. मान लीजिए कि पुराने जमाने में भारत की एक स्त्री भी पढ़ी–लिखी नहीं थी। (वाक्य भेद लिखिए)

उत्तर : मिश्र वाक्य।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. यह दर्पण मुझसे गिर गया था। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : यह दर्पण मैंने गिराया था।

2. इतनी गर्मी में कौन सो सकता है? (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : इतनी गर्मी में किससे सोया जा सकता है?

3. रात भर कैसे जागा जाएगा? (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : रात भर कैसे जागेगें?

4. कोयल मधुर गाती है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : कोयल द्वारा मधुर गाया जाता है।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद–परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. मुझे आम नहीं मिला।

उत्तर : सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन।

2. सोहन इसी घर में रहता है।

उत्तर : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता।

3. घर में कौन रहता है ?

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक।

4. सत्य की सदैव जीत होती है।

उत्तर : कालवाचक क्रिया विशेषण, 'होती है' क्रिया के काल का बोधक।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. "नेक विलोकि धौं रघुबरनि।
बाल–भूषण बसन, तन सुंदर रुचिर रज भरनि।
परस्पर खेलनि अजिर उठि चलनि गिरि परनि।"
उपरोक्त काव्य–पंक्तियों में कौन–सा रस निहित है?

उत्तर : वात्सल्य रस।

2. एक मित्र बोले "लाल तुम किस चक्की का खाते हो?
इतने महँगे राशन में भी, तुम तोंद बढ़ाए जाते हो।"
रस पहचानिए।

उत्तर : हास्य रस।

3. शृंगार रस का स्थायी भाव क्या है?

उत्तर : शृंगार रस का स्थायी भाव रति है।

4. निम्न पंक्तियों में निहित रस बताइए
"रे नृप बालक! कालबस बोलत, तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धन, बिदित सकल संसार।।"

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों में रौद्र रस (क्रोध स्थायी भाव) है।

5. वीर रस का स्थायी भाव क्या है?

उत्तर : वीर रस का स्थायी भाव 'उत्साह' है।

खण्ड–ग 34

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य–पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक् रह गए। एक बेहद बूढ़ा मरियल–सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी–सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत–से चश्मे लिए अभी–अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगाता है! हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ़ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। काम भी था। हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए।

1. हालदार साहब को कौनसी बात बुरी लगी तथा क्यों? 2

उत्तर : हालदार साहब देशभक्त आदमी थे। उनको पानवाले द्वारा देशभक्त का मजाक उड़ाने की बात बुरी लगी क्योंकि वे किसी भी देशभक्त का अपमान होते नहीं देख सकते थे। वे देशभक्तों का अत्यंत सम्मान करते थे।

2. हालदार साहब क्यों हैरान रह गए? कैप्टन का व्यक्तित्व कैसा था? 2

उत्तर : हालदार साहब चश्मे वाले को देखकर हैरान रह गए क्योंकि कैप्टन उनके आशा के विपरीत बहुत बूढ़ा और मरियल-सा, लँगड़ा आदमी था। वह सिर पर काली टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाता था।

3. हालदार साहब चक्कर में क्यों पड़ गए? कैप्टन का क्या व्यवसाय था? 2

उत्तर : हालदार साहब कैप्टन को देखकर चक्कर में पड़ गए, क्योंकि कैप्टन का व्यक्तित्व उनकी सोच के विपरीत था। कैप्टन का व्यवसाय घूम-घूमकर चश्मे बेचना था।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. आशय स्पष्ट कीजिए- "बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

उत्तर : लेखक का उपरोक्त वाक्य से यह आशय है कि लेखक बार-बार यही सोचता है कि उस देश के लोगों का क्या होगा जो अपने देश के लिए सब कुछ न्योछावर करने वालों पर हँसते हैं। देश के लिए अपना घर-परिवार, जवानी, यहाँ तक कि अपने प्राण भी देने वालों पर लोग हँसते हैं। उनका मज़ाक उड़ाते हैं। दूसरों का मजाक उड़ाने वालों के पास भीड़ जल्दी इकट्ठी हो जाती है जिससे उन्हें अपना सामान बेचने का अवसर मिल जाता है।

2. गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है?

उत्तर : गाँव में किसानों की संख्या अधिक होती है। उनका मुख्य धंधा खेती होता है। ज्येष्ठ की तपती गर्मी के पश्चात् आषाढ़ मास में बादल उमड़कर वर्षा करने के लिए आ जाते हैं। इससे किसानों के हृदय में प्रसन्नता का भाव भर जाता है। वर्षा भी रिमझिम आरंभ हो जाती है। किसान धान की रोपाई का काम आरंभ कर देते हैं। गाँव के लोग खेतों में काम पर लग जाते हैं।

3. बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया?

उत्तर : उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को प्रभावित करने वालों में सर्वप्रथम उनके परिवार का हाथ रहा। उनका जन्म संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। उनका जन्म-स्थान डुमराँव है। इसी डुमराँव के कारण ही शहनाई जैसा वाद्य बजता है। उनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ और उस्ताद पैगंबरबख्श खाँ तथा मामू अलीबख्श खाँ का उनकी संगीत साधना को समृद्ध करने में विशेष योगदान रहा। 5-6 वर्ष की उम्र के बाद वे अपने ननिहाल काशी में रहने लगे थे। इस सच्चे सुर की नेमत उन्हें काशी नगरी से मिली। काशी के पुराने बालाजी के मंदिर में उन्होंने रियाज़ किया। रास्ते में उन्हें रसूलनबाई और बतूलनबाई के ठुमरी, टप्पे सुनाई पड़ते। उन्हें संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहनों को सुनकर मिली। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलनबाई और बतूलनबाई ने उकेरी है।

4. नवाब ने अपनी नवाबी का परिचय किस प्रकार दिया? लखनवी अंदाज पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर : नवाब ने खीरों को पहले पानी से धोया फिर उन्हें तौलिए से पोंछा फिर जेब से चाकू निकालकर उनके सिरे काटे और छीलकर उनकी फाँके काट-काटकर तौलिए पर रखीं और उन पर नमक-मिर्च का मिश्रण छिड़का। फिर लेखक को भी खीरे खाने का निमंत्रण दिया। अंत में एक-एक फाँक को खाने की अपेक्षा सूँघ-सूँघकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। उसने ऐसा दिखावा किया कि उसे सुगंध से ही बहुत तृप्ति मिल गई।

5. लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

उत्तर : भटियारखाने के दो अर्थ हैं-

1. जहाँ हमेशा भट्ठी जलती रहती है, अर्थात् चूल्हा चढ़ा रहता है।
2. जहाँ बहुत शोर-गुल रहता है। भट्टीयारे का घर अर्थात् असभ्य लोगों का जमघट।

पाठ के संदर्भ में यह शब्द पहले अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। रसोईघर में हमेशा खाना-पकाना चलता रहता है। पिताजी अपने बच्चों को घर-गृहस्थी या चूल्हे-चौके तक सीमित नहीं रखना चाहते थे। वे उन्हें जागरुक नागरिक बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने रसोईघर की उपेक्षा करते हुए भटियारखाना अर्थात् प्रतिभा को नष्ट करने वाला कह दिया।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाँढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर।

1. 'राख जैसा' किसे कहा गया है और क्यों? 2

उत्तर : मुख्य गायक के बुझे हुए मद्धिम स्वर को राख जैसा कहा गया है, क्योंकि स्वर को ऊँचा उठाते हुए जब उसका गला बैठने लगता है, तो उसका स्वर उत्साहहीन होकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे आग बुझी होने के बाद राख होती है।

2. 'तारसप्तक में जब बैठते है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ'– का भाव स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : प्रश्नोक्त पंक्ति का भाव यह है कि जब मुख्य गायक अपने स्वर को ऊँचा उठाता है तो उसका गला बैठने लगता है और ऐसा लगता है कि उसकी प्रेरणा उसका साथ छोड़ रही है और उसका उत्साह मंद पड़ जाता है।

3. इस काव्यांश का भाव–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : कवि ने बताया है कि प्रत्येक कलाकार की सफलता के पीछे अनेक लोगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. गोपियों ने किन–किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर : गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा उद्धव को उलाहने दिए हैं: वे कहती हैं कि हे उद्धव! हमारी प्रेम भावना हमारे मन में ही रह गई है। हम तो कृष्ण को अपने मन की प्रेम–भावना बताना चाहती थीं किंतु उनका यह योग का संदेश सुनकर तो हम उन्हें कुछ भी नहीं बता सकतीं। हम तो श्रीकृष्ण के लौट आने की आशा में जीवित हैं। हमें उम्मीद है कि श्रीकृष्ण अवश्य ही एक–न–एक दिन लौट आएँगे, किंतु उनका यह संदेश सुनकर हमारी आशा ही नष्ट हो गई है और हमारे विरह की आग और भी भड़क उठी। इससे तो अच्छा था कि तू आता ही नहीं। गोपियों को यह भी आशा थी कि श्रीकृष्ण प्रेम की मर्यादा का पालन करेंगे। वे उनके प्रेम के प्रतिदान में प्रेम देंगे। किंतु उन्होंने निर्गुणोपासना का संदेश भेजकर प्रेम की सारी मर्यादा को तोड़ डाला। इस प्रकार वह मर्यादाहीन बन गया है।

2. परशुराम ने लक्ष्मण को वध योग्य बताने के लिए क्या–क्या तर्क दिए हैं? वर्णन दीजिए।

उत्तर : परशुराम लक्ष्मण के बारे में कहते हैं कि 'मंद' अर्थात् मूर्ख है, स्वभाव से टेढ़ा है। यह अपने कुल का कलंक है। इसे किसी का डर नहीं। इस पर किसी का नियंत्रण नहीं। यह अज्ञानी है। क्षत्रिय राजकुमार होने के कारण यह स्वाभाविक रूप से परशुराम का शत्रु है, क्योंकि परशुराम क्षत्रिय द्रोही है। सबसे बड़ी बात यह थी कि लक्ष्मण ने परशुराम की खिल्ली उड़ाई थी। इन सब कारणों से वे लक्ष्मण को वध के योग्य कहते हैं।

3. 'दुविधा–हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,' पंक्ति कवि की किस विचारधारा की ओर संकेत करती है?

उत्तर : इस पंक्ति में कवि की जीवन के प्रति यथार्थ एवं स्पष्ट विचारधारा व्यक्त हुई है। कवि ने बताया है कि जब मनुष्य का मन दुविधाओं से ग्रस्त रहता है तब उसे आगे बढ़ने का कोई उचित मार्ग नहीं दिखाई देता उसका साहस भी नष्ट होने लगता है। जीवन में वह किसी एक निर्णय पर नहीं पहुँच सकता। इसलिए कवि ने स्पष्ट किया है कि हमें अपने मन में किसी भी प्रकार की दुविधा को स्थान नहीं देना चाहिए। हमारी जीवन–शैली दुविधा रहित होनी चाहिए।

4. संगतकार द्वारा स्थायी को सँभाले रखने की तुलना किन–किन बातों से की गई है और क्यों?

उत्तर : संगतकार द्वारा स्थायी को सँभाले रखने की तुलना उसके द्वारा मुख्य गायक के पीछे छूटे हुए सामान को समेटने से की गई है। इसका कारण यह है कि संगतकार मुख्य गायक की सारी बातों का ध्यान रखता है। वह गायक के सुरों को सहेजने के साथ ही उसके व्यक्तित्व व उसके सामान तक को सँभालना अपनी जिम्मेदारी समझता है। इसी कारण ऐसी तुलना की गई है।

मुख्य गायक के नौसिखिएपन के समय को याद दिलाने के साथ भी संगतकार द्वारा स्थायी (टेक) सँभाले रखने की तुलना की गई है। इसका कारण यह है कि मुख्य गायक जब नया–नया संगीत सीख रहा होता है, तब भी वह सुर से भटककर ऐसे ही उलझाव में फँस जाता है।

5. वस्त्र और आभूषण स्त्री के बंधन क्यों कहे गए हैं?

उत्तर : स्त्री के लिए वस्त्र और आभूषण उसके सौंदर्य को बढ़ाने वाले साधन हैं। समाज उसकी सुंदरता और कोमलता के कारण ही उसके लिए आचरण के प्रतिमान गढ़ देता है। स्त्री को आदर्श के आवरण में कैद कर दिया जाता है। वस्त्र–आभूषण स्त्री को पुरुष से अलग करते हुए उसके कोमल स्वरूप की पहचान बन जाते हैं। इसलिए इन्हें स्त्री जीवन का बंधन कहा गया है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए– $3 \times 2 = 6$

1. माता का अँचल पाठ में बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव दिखाया गया है परंतु विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ के पास जाता है। क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : माँ जननी होती है, उसी का दूध पीकर शिशु बड़ा होता है अतः माँ और शिशु का एक–दूसरे से घनिष्ठ संबंध बन जाता है। माँ बच्चे के दुख–दर्द का अनुभव ठीक तरह से महसूस करती है। माँ का अपने बच्चे के प्रति गहरा लगाव होता है। बच्चे को सबसे नजदीक माँ ही लगती है क्योंकि बच्चे की प्रारंभिक अवस्था में माँ ही उसकी संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। अतः बच्चे को यह पता होता है कि माँ ही

उसकी बात को प्रेमपूर्वक सुनेगी। माँ बच्चे के लिए सब कुछ सहन कर सकती है। वह उसकी देखभाल जितनी आसानी से करती है, उतना कोई और नहीं कर सकता है। बच्चे को माँ की गोद में आनन्द, शांति तथा सुख मिलता है। वे दोनों एक–दूसरे के बिना नहीं रह सकते हैं। जैसे पाठ में लेखक का अपने पिता के साथ अधिक जुड़ाव दृष्टिगत होता है। वह अपने पिता के साथ ही सोता–उठता, नहाता तथा पूजा करता है। परंतु पाठ के अंतिम भाग में साँप के भय से डरा हुआ लेखक गिरते–पड़ते घर पहुँचता है तो वह अपने पिता के पास न जाकर सीधे अपनी माँ के पास जाता है। पिता, चोटों से घबराए हुए पुत्र को माँ की गोद से अपनी गोद में लेने का प्रयास करते हैं परंतु वह माँ की गोद नहीं छोड़ता है।

2. 'साना–साना हाथ जोड़ि....' पाठ में लेखिका ने हिमालय का किन–किन रूपों में वर्णन किया है? वर्णन करें।

उत्तर : 'साना–साना हाथ जोड़ि' पाठ में लेखिका ने हिमालय के विभिन्न रूपों को चित्रित किया है। लेखिका बालकनी से हिमालय की तीसरी सबसे बड़ी चोटी कंचनजंघा के दर्शन करना चाहती थी किंतु हल्के बादलों से आसमान घिरा होने के कारण कंचनजंघा नहीं देख सकी। आगे बढ़ने पर हिमालय बड़ा होते–होते विशालकाय होने लगा। भीमकाय पर्वतों के बीच से निकलते हुए ऐसा लगता था कि किसी सघन हरियाली वाली गुफा के बीच हिचकोले खाते निकल रहे हैं। लेखिका कभी पर्वतों के शिखरों को देखती तो कभी ऊपर से दूध की धार की तरह झर–झर गिरते जल प्रपातों को देखती। कभी नीचे चिकने–चिकने गुलाबी पत्थरों के बीच इठला कर बहती चाँदी की तरह कौंध मारती बनी ठनी तिस्ता नदी को। उसने खूब ऊँचाई से पूरे वेग के साथ ऊपर शिखरों के भी शिखर से गिरता फेन उगलता झरना देखा, जिसका नाम था– 'सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल'। रात के गहराते अँधेरे में ऐसा लगता था कि हिमालय ने काला कंबल ओढ़ लिया हो।

3. सरकारी व्यवस्था में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो अफरातफरी मची है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है?

उत्तर : हमारी सरकारी व्यवस्था लाचार है। कोई भी कार्य को करने से पहले हम घबरा जाते हैं क्योंकि हम स्वयं को हमेशा दुरुस्त नहीं रखते। समय विशेष पर किसी कार्य का बीड़ा उठाते हैं और येन–केन–प्रकारेण चाहे जैसे हो जितना व्यय हो उसे कर लेते हैं। सरकारी व्यवस्था में जॉर्ज पंचम की नाक लगाना इसी का एक उदाहरण है। जॉर्ज पंचम की नाक लगाने की चिंता दूसरों का मान–सम्मान करने की मानसिकता को दर्शाती है। भारतवासी विदेशियों की आवभगत के लिए इतने परेशान हो जाते हैं कि अपने देश के संचित कोष के नुकसान का भी ख्याल नहीं रहता जो हमारी हीनता तथा गुलाम मानसिकता का सूचक है।

खण्ड–घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए– 10

(1) समय का सदुपयोग

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ सफल जीवन का रहस्य ✲ समय की उपेक्षा का परिणाम ✲ उपसंहार।

(2) खेलकूद का महत्त्व

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ खेलकूद से लाभ ✲ समग्र व्यक्तित्व का विकास ✲ खेलकूद की आवश्यकता ✲ उपसंहार

(3) फैशन की बढ़ती प्रवृत्ति

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ फैशन का प्रसार ✲ युवा वर्ग पर प्रभाव ✲ फैशन की प्रासंगिकता ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) समय का सदुपयोग

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ सफल जीवन का रहस्य ✲ समय की उपेक्षा का परिणाम ✲ उपसंहार।

भूमिका– समय के सदुपयोग का अर्थ है– समय का सही उपयोग। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि सही समय पर सही कार्य करना ही 'समय का सदुपयोग' कहलाता है। किसी भी प्रकार की सफलता का रहस्य समय का सदुपयोग है। समय वह धन है, जिसका दुरुपयोग करने से पछताने के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता।

सफल जीवन का रहस्य– समय के सदुपयोग में ही जीवन की सफलता का रहस्य निहित है। समय सभी के लिए समान रहता है– चाहे वह निर्धन हो या धनवान, राजा हो या रंक, मूर्ख हो या विद्वान्। इसलिए सभी को अपना जीवन सफल और सार्थक बनाने हेतु, समय का सदुपयोग करना ही पड़ता है। आज तक जितने भी महान् व्यक्ति हुए हैं, सभी ने समय के महत्त्व को एक मत में स्वीकार किया है। समय का सदुपयोग सामान्य व्यक्ति को भी महान् बना देता है और महान् व्यक्ति को भी अत्यंत सामान्य।

समय की उपेक्षा का परिणाम– किसी विचारक ने ठीक ही कहा है कि जो व्यक्ति समय को बर्बाद करते हैं, एक दिन समय उन्हें बर्बाद कर देता है। अंग्रेजी में भी समय को धन कहा गया है। जो व्यक्ति इस धन को यूँ ही लुटाता रहता है, वह एक दिन समय का रोना रोता है, किंतु बाद में पछताने से कुछ नहीं मिलता है।

समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। खोया हुआ धन, पुनः अर्जित किया जा सकता है। खोया हुआ वैभव, पुनः प्राप्त किया जा सकता है। खोया हुआ स्वास्थ्य, उचित चिकित्सा द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। भूली हुई विद्या पुनः अर्जित की

जा सकती है, किंतु समय को एक बार खोने के बाद उसे पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह निरंतर गतिशील है। अतः हमें इसके साथ कदम मिलाकर चलते रहना चाहिए। अन्यथा हमें समय की उपेक्षा का दंड झेलना ही पड़ता है।

उपसंहार– व्यक्ति को सफलता प्राप्त करने के लिए अपना निश्चित कार्यक्रम बनाकर एवं एकाग्रचित्त होकर कार्य करना चाहिए, तब ही सफलता उसका वरण करेगी। प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना ही बुद्धिमानी है। अतः समय की महत्ता को समझना व पहचानना चाहिए। महादेवी वर्मा ने भी लिखा है–

तू मोती के द्वीप स्वप्न में रहा खोजता,
तब तो बहता समय शिला–सा जम जाएगा।

(2) खेलकूद का महत्त्व

संकेत–बिंदु: ✲ भूमिका ✲ खेलकूद से लाभ ✲ समग्र व्यक्तित्व का विकास ✲ खेलकूद की आवश्यकता ✲ उपसंहार

भूमिका– खेलकूद मनुष्य के लिए वरदान स्वरूप माने जाते हैं। इससे व्यक्ति का मस्तिष्क पूर्ण रूप से स्वस्थ रहता है। यदि व्यक्ति का मस्तिष्क स्वस्थ न रहे, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। किसी भी व्यक्ति का मस्तिष्क तभी स्वस्थ रह सकता है, जब उसका शरीर भी तंदुरुस्त रहे।

खेलकूद से लाभ– खेलकूद के अनेक लाभ हैं– इससे शरीर की मांसपेशियाँ एवं हड्डियाँ मज़बूत रहती हैं। रक्त का संचार सुचारु रूप से होता है, पाचन क्रिया सुदृढ़ रहती है, शरीर को अतिरिक्त ऑक्सीजन मिलती है और खेलकूद से रोग–प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ जाती है।

समग्र व्यक्तित्व का विकास– खेल मनुष्य के शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है–

पत्थर–सी हों मांसपेशियाँ, लोहे–सी भुजदंड अभय।
नस–नस में हो लहर आग की, तभी जवानी पाती जय।।

अतः एक व्यक्ति को शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करना आवश्यक है और खेल व्यायाम का एक ऐसा प्रकार है, जिसमें व्यक्ति का शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक मनोरंजन भी होता है।

खेलकूद की आवश्यकता– खेल से मानसिक तनावों को झेलने की क्षमता बढ़ती है। स्वामी विवेकानंद से कहा था, यदि तुम गीता के मर्म को समझना चाहते हो, तो खेल के मैदान में जाकर फुटबॉल खेलो। सचमुच जीवन में शिक्षा की भाँति खेल के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। नियमित दिनचर्या में यदि खेलकूद का समावेश कर लिया जाए, तो व्यक्ति के जीवन में उल्लास–ही–उल्लास छा जाता है। अवकाश के समय घर के अंदर खेले जाने वाले खेलों से न केवल स्वस्थ मनोरंजन होता है, बल्कि ये आपसी मेल–जोल को बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध होते हैं।

उपसंहार– खेल के महत्त्वपूर्ण होने के पश्चात् भी यदि व्यक्ति पेशेवर खिलाड़ी नहीं है, तो उसके लिए इस बात का ध्यान रखना अनिवार्य हो जाता है कि खेल को खेल के समय ही खेला जाए, काम के समय नहीं। इस प्रकार हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि मनुष्य के सर्वांगीण एवं संतुलित विकास के लिए खेलकूद को जीवन में पर्याप्त स्थान दिया जाना चाहिए।

(3) फैशन की बढ़ती प्रवृत्ति

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ फैशन का प्रसार ✲ युवा वर्ग पर प्रभाव ✲ फैशन की प्रासंगिकता ✲ उपसंहार

भूमिका– बदलती दुनिया में बहुत सारी प्रवृत्तियाँ बदलती रही हैं। कुछ प्रवृत्तियाँ धीमी गति से परिवर्तित होती हैं, किंतु कुछ प्रवृत्तियों की गति अत्यधिक तीव्र होती है। फ़ैशन एक ऐसी ही प्रवृत्ति है, जिसे पकड़ना मुश्किल है। आज नित्य–प्रति फ़ैशन की दुनिया बदलती जा रही है। मानव के रहन–सहन तथा पहनावे में आने वाला परिवर्तन ही फ़ैशन है।

फ़ैशन का प्रसार– फ़ैशन का संबंध मानव–समाज से है। सभ्यता तथा संस्कृतियों के विकास के साथ फ़ैशन की गतिविधियाँ बढ़ती गई हैं। पहले मानव फूलों तथा मिट्टियों से बने हारों से अपने सौंदर्य को निखारता था। प्राचीनकाल में भारत अपने सौंदर्य प्रसाधनों के लिए प्रसिद्ध रहा था। फ़ैशन के पीछे परिवर्तन की लालसा, नवीनता बोध, उपयोगिता तथा नवीन सौंदर्य की इच्छा महत्त्वपूर्ण कारक हैं, किंतु वर्तमान में फ़ैशन का मानदंड तथा प्रवृत्तियों में तेज़ी से परिवर्तन आया है। फ़ैशन के नाम पर अश्लीलता तथा उच्छृंखलता का वातावरण निर्मित हो रहा है।

युवा वर्ग पर प्रभाव– फ़ैशन की दुनिया ने युवा वर्ग विशेषकर विद्यार्थियों को अत्यधिक प्रभावित किया है। विद्यार्थी–जीवन एक ऐसा समय होता है, जब किशोर अपने मन की सभी आकांक्षाओं को पूरा करना चाहता है। इस समय उसका मन बहुत चंचल होता है। इस चंचलता के दौर में फ़ैशन उन्हें प्रेरणा देने का कार्य करता है। सिनेमा, टेलीविज़न तथा अन्य संचार माध्यम फ़ैशन की दुनिया का विस्तार करते हैं और किशोर–युवा वर्ग उसे अपनाने से स्वयं को रोक नहीं पाता।

फ़ैशन की प्रासंगिकता– एक ओर इससे युवा वर्ग अपना बहुमूल्य समय नष्ट करता है, तो दूसरी ओर धन का अपव्यय कर शिक्षा पर किए जाने वाले खर्च की जगह फ़ैशन को महत्त्व देने लगता है। इससे कई बुराइयाँ सामने आती हैं। फ़ैशन का वर्तमान क्षेत्र वस्त्र, परिधान तथा सौंदर्य–प्रसाधनों के प्रयोग तक ही सीमित नहीं रह गया है, बल्कि फ़िल्में देखना, रेस्तरां जाना इत्यादि भी फ़ैशन के हिस्से बन गए हैं। इसमें रुचि और नवीनता का बोध समाप्त हो गया है तथा केवल दिखावा महत्त्वपूर्ण हो गया है। नगरों से लेकर गाँवों तक इसने अपना प्रसार किया है।

उपसंहार– फ़ैशन उचित है, किंतु समयानुकूल फ़ैशन ही सौंदर्य का प्रतीक बन पाता है। एक विद्यार्थी अपनी पढ़ाई से अधिक ध्यान फ़ैशन पर दे अथवा एक युवक अपने लक्ष्यों पर ध्यान न

देकर फ़ैशन के पीछे भागता रहे, तो इसके प्रतिकूल परिणाम ही सामने होंगे। सुंदरता से अधिक उपयोगिता को महत्व देना वर्तमान युग की चेतना का हिस्सा है। सादगी सर्वोत्तम फ़ैशन है। संतुलित फ़ैशन को अपनाकर ही हम अपने व्यक्तित्व को प्रभावी बना सकते हैं।

12. वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर छोटी बहन को बधाई देते हुए एक पत्र लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

परीक्षा भवन
श्याम विहार
दिल्ली-56
दिनांक- 18 मार्च, 2019
प्रिय सुमन
सस्नेह प्यार

कल पिताजी के पत्र से ज्ञात हुआ कि विद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता में तुमने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मैं यह जानकर खुशी से झूम उठा। तुम्हारी इस शानदार सफलता के लिए कोटिशः बधाई। मेरी शुभकामना है कि तुम जीवन में हमेशा इसी तरह सफल होती रहो। भगवान तुम्हारी प्रत्येक इच्छा पूरी करे। मैं ठीक हूँ अपना ख्याल रखना और पूरी लगन से पढ़ाई करना।

तुम्हारा बड़ा भाई
नवल

अथवा

आनन्द माहेश्वरी के विवाह पर आप किसी कारणवश नहीं जा सके। उनसे क्षमा माँगते हुए उन्हें लगभग 80-100 शब्दों में विवाह की शुभकामनाएँ दीजिए।

उत्तर :

D.A.-27, शालीमार बाग
दिल्ली।
दिनांक- 20 नवंबर, 2019
प्रिय आनंद
सप्रेम नमस्कार।

आपको विवाह की बहुत-बहुत बधाई। नया सफर सुहावना हो। जीवन साथी के आने से आपके जीवन की खुशियाँ बढ़े। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए।

विवाह में आने के लिए मेरा कार्यक्रम तय था, परंतु अचानक मुझे मुंबई जाना पड़ गया। विवाह में नहीं आने का मुझे खेद है। शीघ्र ही मैं आपसे मिलूँगा।

आपका,
अजय

13. राष्ट्रप्रेम के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिए एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

जरा याद करो कुर्बानी

जिन्होंने देश के लिए हँसते-हँसते अपना जीवन कुर्बान कर दिया उनके लिए देश ही सबकुछ था और आपके लिए .....

अखिल भारतीय एकता मंच द्वारा प्रकाशित

अथवा

आपको अपना मोबाइल बेचना है। इसका एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

मोबाइल बिकाऊ है

- एण्ड्रॉयड 9 पाई
- स्नेपड्रेगन 786
- 4 जीबी रेम
- 12 महीने की वारंटी
- इयूल 4 जी सिम कार्ड एलटीई
- 24 मेगापिक्सल कैमरा
- फुल एचडी स्क्रीन
- ब्लैक-कलर
- मात्र ₹6300

संपर्क- 9351230000

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE